मार्त्तण्ड

किसी से ग़म कभी इजहार करते क्यों
खड़ी तुम दर्द की मीनार करते क्यों

बुझे कितने दिए, फिर भी जलाने इक
दिया, फिर से नहीं तैयार करते क्यों

लुटी इस जिंदगी को फिर सजाने तुम
बढ़ाया अब नहीं रफ़्तार करते क्यों

अभी बाजार सजता हर जगह देखो
मगर इस देह का व्यापार करते क्यों

छिपा इस बंद मुट्ठी में सभी कुछ है
इसे फिर खोलने, इंकार करते क्यों

बिक रहा ईमान घर-घर क्या कहें
सत्यवादी आज बेखर क्या कहें

ब्लॉक थाना हर जगह अब झूठ है
कोर्ट ऊपर मैली चादर क्या कहें

देख लो अपराधियों को जेल में
मौज करता शेर बब्बर क्या कहें

वादा था उनका, बदल देंगे फिजा
आज भी सिर पर न छप्पर क्या कहें

बह सका, बहती हवा के संग ना
मुफ़लिसी से मैं न बाहर क्या कहें